प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पंतनगर, जिला- ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

पंतनगर ने उत्तराखण्ड के लिए धान की नयी प्रजातियां विकसित की

कालानमक प्रजाति के उच्चगुणवत्ता के जीनोटाइप भी विकसीत

पंतनगर। २७ मई, २०१७। पंतनगर विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा उत्तराखण्ड के लिए धान की दो नयी प्रजातियां, पंत धान २२ व पंत धान २८, विकसित की हैं, जिन्हें शीघ्र ही राज्य सरकार को विमोचन हेतु भेजा जाएगा। ये प्रजातियां मध्यम अगेती एवं मध्यम अवधि में पकने वाली हैं। इनके अतिरिक्त भारत सरकार के जैव प्रौद्योगिकी विभाग की राष्ट्रीय परियोजना के अंतर्गत धान की कालानमक नामक प्रजाति के उन्नयन द्वारा, तीन वर्ष के शोध के पश्चात, विकसित विशिष्ट गुणों हेतु तीन जीनोटाइप का चयन किया गया है, जिन्हें राष्ट्रीय पादप आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो, नई दिल्ली, में पंजीकरण हेतु भेजा जाएगा।

विश्वविद्यालय ने उत्तराखण्ड के मैदानी क्षेत्रों के लिए पिछले ५ वर्ष में विभिन्न प्रकार के धान की ६ किस्में विकसित की हैं। मध्यम सिंचित दशाओं के लिए पंत धान २३ व पंत धान २६ प्रजातियां तथा सुगन्धित धान की पंत धान सुगंध २५ व पंत धान सुगन्ध २७ प्रजातियां वैज्ञानिकों द्वारा विकसित की गयी हैं। वर्ष २०१५ में विश्वविद्यालय द्वारा पहली बार बासमती धान की भी दो उन्नत प्रजातियां, पंत बासमती १ व बासमती २ विकसित की गयी। पंत बासमती १ उत्तराखण्ड के साथ-साथ उत्तर प्रदेश व दिल्ली के लिए तथा पंत बासमती २ इन तीन प्रदेशों के अतिरिक्त पंजाब व हरियाणा के लिए भी संस्तुत की गयी। इन दोनों बासमती प्रजातियों के बीज की मांग को देखते हुए विश्वविद्यालय द्वारा पंत बासमती १ का लगभग २८ कुन्तल तथा पंत बासमती २ का लगभग १७ कुन्तल प्रजनक बीज तैयार किया गया, जिसमें से अधिकतर की बिक्री की जा चुकी है। पूर्ण रूप से पर्वतीय क्षेत्रों के लिए भी वैज्ञानिकों द्वारा धान की प्रजातियां विकसित की गयी हैं, जिनमें पंत धान ६, पंत धान ११ व गोविन्द किस्में किसानों में अत्यंत प्रचलित हैं। उत्तराखण्ड के धान के उन्नयन हेतु अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर फ्लीपीन्स के अंतर्राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान (आई.आर.आर.आई.) से सहयोग हेतु भी प्रयास किये जा रहे है।

ज्ञात हो कि पंतनगर विश्वविद्यालय ने धान उन्नयन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसके द्वारा अभी तक धान की २५ प्रजातियों का विमोचन किया गया है जो उच्च गुणवत्तायुक्त व अधिक उत्पादक रही हैं। पिछले एक दशक में १० नयी प्रजातियों का विकास विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों के सतत प्रयास का द्योतक है।